PREFACE

प्रतियोगिता का वर्तमान दौर सर्वश्रेष्ठ का है, दौड़ में सबसे आगे निकलने के लिए समय का आदर्शतम उपयोग करना लाजिमी हो गया है वरना टीनएजर आज पिछड़ जायेंगे। जीवन की तरक्की में शिक्षा और काबिलीयत का महत्त्व सदियों से हम देखते और महसूस करते आ रहे हैं, लेकिन समय के साथ हुए बदलावों ने सभी को यह जता दिया है कि पारम्परिक शिक्षा पद्धति को अपनाएंगे तो लक्ष्य को भेदना तो दूर, उसके आस-पास या परिधि में भी नहीं पहुँच पायेंगे। इसलिए शिक्षा की पूर्णता विद्यार्थी-जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे पूरा कर लेने की योजना (Planning) बना लेने में है। टीनएजर्स द्वारा अपना लक्ष्य तय कर पाना सबसे कठिन मुकाम हासिल करना होता है। अभ्यास की निरन्तरता भी चाहिए और समय का प्रबन्धन भी। शिक्षा की पूर्णता कोरी एकेडमिक शिक्षा ही नहीं, अनुभव, प्रयोग और प्रैक्टिकल्स के साथ पूर्णता का फार्मूला—कहाँ से प्राप्त करें? —बस, यही उद्देश्य जीवन की यात्रा का होना चाहिए। परन्तु अफसोस कि विद्यार्थी आजकल के जगत् में अपनी प्राथमिकताएँ, अध्ययन का रुझान पानी पर लकीरों की तरह बदलते रहते हैं, क्योंकि एकेडमिक (Acadamic) पढ़ाई महान् व्यक्तित्व का विकास या निर्माण नहीं कर सकती। व्यक्तित्व और काबिलीयत ही हमेशा जीवन बनाती है। अध्ययन हम उस उम्र में करते हैं, जिस उम्र में हम बेहतर समझदार नहीं होते। यही कारण है कि डाक्टर पढ़ाई करने के बाद आई. ए. एस. बनना पसन्द करता है और इंजीनियर अपनी पढ़ाई के बाद एम. बी. ए. बनने की कोशिश करने लगता है। एकेडमिक पढ़ाई जीवन में अच्छा हथियार दे सकती है, लेकिन यह नहीं है तो आदमी बेकार है, ऐसी बात नहीं है।

यह किताब उन विद्यार्थियों के लिए नहीं है जो सिर्फ 80/100 अंक हासिल करने की ख्वाहिश रखते हों, यह उन टीनएजर्स के लिए भी नहीं है जो यह सोचते हैं कि उन्हें आगे बढ़ने का या नौकरी हासिल करने का एक सुलभ रास्ता बतला देगी। यह उन स्टूडेण्ट्स के लिए भी नहीं है जो सिर्फ यह सोचते हैं कि कॉलेज की डिग्री में अच्छे अंक लाने से अच्छा जॉब हासिल होकर जिन्दगी सुनहरी हो जायेगी। यह पुस्तक उन टीनएजर्स के लिए है जो मानसिक स्तर पर अपने को कमजोर पाते हों। यह पुस्तक उन्हें मानसिक स्तर पर इतना मजबूत बना देती है कि आज स्टूडेण्ट के अन्दर जो ऊर्जाशक्ति है, उसे अध्ययन की

कला को एक सरल रेखा (Simple) की तरह चला देती है जिससे उन्हें दिशा, लक्ष्य और भविष्य का मानचित्र बनाने में कहीं दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता। वरना टीनएजर्स के जीवन के तार आपस में इस तरह उलझ जाते हैं कि उनको अपनी दशा और दिशा का ही पता नहीं चलता।

नवयुवकों के तार हमेशा उलझे ही रहते हैं। अच्छे जीवन के लिए जरूरी है कि उन उलझे हुए तारों को सुलझाया जाए। सही और अच्छी दिशा के लिए प्रतिबद्धता की बहुत ज्यादा जरूरत रहती है। यह पुस्तक अध्ययन की कला को एक बेहतर जिन्दगी का ताबीज देती है, जिसमें सूक्ष्म अध्ययन ही भविष्य का मानचित्र होता है। बहुत–से पृष्ठों और बहुतेरी पुस्तकों के अध्ययन की बजाय यह एक ऐसा मंत्र प्रदान करती है जिससे अधिकतम अंक प्राप्त हो सकें। आदर्शों का कोई मोल नहीं होता। कुदरत के नियम जानने वाले कभी ज्यादा नहीं पढ़ते। बल्कि वे अपने लक्ष्य पर नजर रखते हुए अपने दिमाग को ट्यून (Tune) और फाइन ट्यून (Fine Tune) करते रहते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। 80/100 मार्क्स की प्राप्ति का एक लक्ष्य होता है। अंकों की पटकथा लिखने वाला सिर्फ अंकों का ही सोचेगा, क्योंकि वह जानता है कि जीत की पटकथा और हार की पटकथा में सिर्फ शब्दों का ही अन्तर होता है, जिसमें आधी–अधूरी योजना के बूते पर किसी प्रतियोगी इम्तिहान की तैयारी करना समय की बरबादी के अलावा कुछ नहीं। अध्ययन किसी भी निर्णय (Decision) से शुरू होता है और लक्ष्य की तरफ ही बढ़ता है। करिश्मा बाहर से नहीं आता, भीतर ही होता है। आजाद टीनएजर्स के अन्दर कुछ सोचने, फैसला करने और अपने फैसले पर अमल करने की दिलेरी होती है। जबकि कच्ची लगन वाला विद्यार्थी अपनी यह दिलेरी खो चुका होता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि 80/100 मार्क्स का निर्णय छोटा है या बड़ा। निर्णय लेने का अर्थ है अपने लक्ष्य को निर्धारित करना। और इस काम के लिए सच्चे साहस की जरूरत है। खास तौर पर जब निर्णय बड़ा हो, क्योंकि अगर आप भाग्य की गर्दन पकड़ने का साहस करते हैं तो आप एक कठोर व महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। यह आपके जीवन के पैमाने का मतलब ही बदल देगा और उसके बाद जो आप माँगोगे वो आपको दिया जायेगा, 80/100 मार्क्स ढूँढ़ोगे तो पाओगे, खटखटाओगे तो तुम्हारे लिए दरवाजा खोला जायेगा। जिन्दगी का जादू इस बात में नहीं है कि अच्छे पत्तों को हाथ में जमा करके रखा जाए, बल्कि इस बात में है कि उन्हें खेल कर जीता जाए। क्या चाहिए तुम्हें? पूरी धरती और पूरा आकाश या तुम्हारी असाधारणता का प्रतीक–प्रतिभा–काबिलीयत? जवाब, यह पुस्तक होगी।

प्रतियोगी परीक्षाओं में कामयाब होना असम्भव कतई नहीं है। हां, मुश्किल जरूर है। लेकिन इन मुश्किलों को अपने बलबूते पर इस पुस्तक के माध्यम से आसान किया जा सकता है। यदि एक बार यह कला सीख ली जाए तो बदलती दुनिया में आपको सफल होने से कोई रोक नहीं सकता। असम्भव को इनसान अकसर तराशते नहीं हैं। जीरो में से जीरो ही हासिल होगा।

80/100 मार्क्स आगे बढ़ने का एक रास्ता–भर है, मंजिल नहीं। अतीत हमारी पहचान है और अपनी पहचान किसको प्यारी नहीं होती? भगवान् ने इनसान को गढ़ा है, उसे (भगवान्) किसी ने नहीं देखा। पर धरती, आकाश, सूरज, चांद–सितारे और प्रतिभाशाली इनसानों को देखा है—उस पर अपना विश्वास जमाएँ। सपनों की उड़ान को हकीकत के धरातल से मत टकराने दो, वरना ठेस लग जायेगी। योजना पर अमल करने से पहले जाँचना जरूरी है कि योजना की कामयाबी की कितनी संभावना है। कहते हैं कि नाकामी में ही कामयाबी छुपी होती है और जिन स्टूडेण्ट्स में शोहरत और सफलता पाने की ललक होती है, वे जल्द ही अपने अंकों का रास्ता तलाश लेते हैं। कुछ प्रायोगिक अध्ययन ऐसे होते हैं जो विद्यार्थियों के जहन में हमेशा के लिए अंकित हो जाते हैं। समय की गर्द भी उन्हें धूमिल नहीं कर सकती। वे हमेशा ताजा बने रहते हैं। ऐसे अध्ययन ही नवयुवकों को 80/100 मार्क्स से ज्यादा हासिल करने में मदद करते हैं।

आपको इंजीनियर, डाक्टर, गणित का महाज्ञाता होना कतई जरूरी नहीं है। इसमें आपकी तर्कशक्ति, विश्लेषण शक्ति की परीक्षा होती है और निर्णय लेने की क्षमता की जाँच होती है, न कि बड़े सवाल हल करने की। बहुत कम लोग और स्टूडेण्ट्स ऐसे होते हैं जो हर विषय में अच्छे होते हैं। इसलिए कुल मिलाकर बात यह है कि आप अपने–आप को निखारें। अपनी तैयारी पर ध्यान देवें, न कि दूसरों की तैयारी पर। अपनी कमजोरी और अपनी ताकत, दोनों का अध्ययन करें। अच्छा संस्थान और पढ़ाई की सामग्री यकीनन आपकी मदद करेगी, मगर सफलता की गारंटी नहीं। अगर कोचिंग जाना चाहें तो जाएँ, परन्तु याद रखें कि स्वयं के अभ्यास, अध्ययन और प्रयोगों से ही 80/100 मार्क्स की सफलता मिलेगी। जो स्टूडेण्ट्स तैयारी के नाम पर पूरा एक साल का समय लेकर चलते हैं वे ज्यादातर समय तैयारी की तैयारियों में बिता देते हैं और अनुशासनहीनता के चलते पूरा साल गंवा देते हैं। हम अपने भाग्य के लेखक स्वयं हैं, कोई और नहीं।

परिश्रम और एक समय–सीमा में पूरी तरह से खुद को तैयार करना होगा। सही तैयारी का मतलब है सर्वश्रेष्ठ पर निशाना साधना और यह पुस्तक इस संदर्भ

में आपके लिए सर्वश्रेष्ठ होगी ताकि अगर आप टॉप टेन (Top Ten) में शामिल नहीं हो सकते तो क्या हुआ—बाकी तो सब आपके हाथ में है। 'औसत' पर नदी में कोई छलाँग नहीं लगाता और औसत पर भी कोई दाव नहीं लगाता। क्योंकि भला समझदार इनसान और उत्कृष्टता (Excellent) की तरफ ध्यान देने वाला टीनएजर तो ऐसी हरकत नहीं ही करेगा। नाव या अन्य सवारी का इंतजार करके ही नदी पार करेगा। 80/100 मार्क्स की यह नाव आपको जरूर बिना खतरे के नदी पार लगा देगी। जाहिर–सी बात है कि इस किताब के अध्ययन के नतीजे आपके सामने अंकों के दरवाजे खोल देंगे। दरअसल सफल रहे सभी नवयुवकों में कुछ–न–कुछ खास होता है। आज के नवयुवकों को एक बात तो अच्छी तरह से समझ ही लेनी चाहिए कि अब माहौल सुधर रहा है और इस चीखती सचाई पर से परदा हटा कर, खूबियों की अहमियत को समझ कर 80/100 मार्क्स की दक्षता प्राप्त करनी है। यह तथ्य अजीबोगरीब है कि अध्ययन को जन्म देने वाले उर्वरक दिमाग को हम इस्तेमाल ही नहीं करते, क्योंकि सत्य से हम घबराते हैं और सपना कभी खाली बैठने से पूरा नहीं होता। दुनिया में अधिकतर विद्यार्थी बच–बच कर परीक्षाएँ पास करते हैं। अपने को चुनौतीभरे जोखिम से दूर रख कर वे जिन्दगी को केवल सुरक्षा के घेरे में बांधने के प्रयास में अपने इम्तिहान सिर्फ उत्तीर्ण ही करते हैं। विद्यार्थी के लिए अंक हासिल करना ही सिर्फ एक काम होता है, पर हर नवयुवक अपने ढंग से करता है। अंक खुदा द्वारा दिए गए वरदान नहीं होते। वो तो हमारे सामने बिखरे होते हैं जिन्हें हंस ही चुग सकता है। जो विद्यार्थी चित्त को बिखेर कर अध्ययन करता है—उसे वर्षों तक अच्छे अंकों का पश्चात्ताप ही रहेगा।

फिर भी, अगर आपको अपनी योग्यता पर संदेह है तो उन लोगों को देखिए जो शारीरिक अक्षमता और अभावों के बीच भी बड़े से बड़े काम कर जाते हैं। लेकिन पहले खुद को उसके प्रति तैयार करना होगा और खुद पर विश्वास करना होगा कि मैं भी सफल होने और 80/100 प्रतिशत मार्क्स हासिल करने में उतना ही सक्षम हूँ जितना कि कोई अन्य। प्रथम आने वाला स्टूडेण्ट कोई दस गुणा अधिक अध्ययन नहीं करता, बल्कि दस गुणा ज्यादा सरल तरीके से अध्ययन करके अंकों से आधार कोण (Base Angle) बना कर—शीर्ष कोण का निर्माण करता है। प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए चमत्कार होता नहीं है—चमत्कार किया जाता है। वह रातों को दाँव पर लगा कर अंकों से दोस्ती नहीं करता और ना ही अध्ययन के कलेण्डर पर आखिरी तारीख अंकित करता है। 'समय' ही इन प्रचलित पुरस्कारों से परे एक ऐसा न्यायाधीश होता है जो

योग्यता का सही निर्णय करता है। 'समय' ही जानता है कि अनुकूल समय की प्रतीक्षा करने वाला इनसान पीछे रह जाता है क्योंकि वह कभी आता ही नहीं है। आधी दुनिया नहीं जानती कि बाकी आधी दुनिया कैसे रहती है। अच्छे अंक और अच्छे अध्ययन के बीच एक युद्धरेखा खींचनी पड़ती है, तब ही आप अंकों का युद्ध जीत सकते हैं। क्योंकि कुदरत गुनगुनाती है जिसमें अनुभव का कोई विकल्प नहीं होता।

जीवन को अपने इशारे पर चलाने और अपनी सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आज का युवा कटिबद्ध है। उसे चाहिए श्रीकृष्ण जैसा एक मार्गदर्शक या Decoding 80/100 Marks की तरह की पुस्तकें, अन्यथा परिणाम शून्य ही रहेगा। ज्ञान अक्ल और अंक का कोरा ढिंढ़ोरा पीटने से नहीं आयेगा। यह मात्र मनन, चिंतन और कोरे सपने देखने से भी नहीं आयेगा। बल्कि जीवन में अनुशासित मेहनत, उच्च शिक्षा और जिन्दगी के अनुभवों से आ सकता है। दुनिया में हर इनसान के जीवन के अलग-अलग लक्ष्य होते हैं और सोच के अनुसार ही इनसान अपनी प्राथमिकताएँ तय करता है। आपके पास एक ही जीवन है, इसे आप यूँ ही बहाने बना कर गुजार दें अथवा योजना बना कर, संघर्ष करके उपलब्धियाँ हासिल करें और अपने जन्म को सार्थक करें, यह चुनाव आपका है। एकेडमिक केरियर की दौड़ में कितने युवक-युवतियाँ हिस्सा ले पाते हैं, कितने बीच में ही पिछड़ जाते हैं और कितने कम अर्जुन की भांति आँख पर सही जगह निशाना साध पाते हैं, लगा पाते हैं; इसका मुख्य कारण है मार्गदर्शक की कमी। यह पोथी आपके लिए मार्गदर्शक का काम करेगी। हर शिक्षा कुरुक्षेत्र का एक रण-मैदान है। बस, जरूरत है तो अच्छे अभिभावक और शिक्षक की, युवा विद्यार्थियों की समस्या सुलझाने की है, ना कि उसको इकट्ठा करने की। आज हर टीनएजर का अपना उद्देश्य निर्धारित करके नियमित अध्ययन शुरू कर देना ही 80/100 अंकों की सफलता की तरफ बढ़ना होता है। संकल्प सिर्फ मन में होता है—जिसमें चुनौती को इनाम मानें तो अड़चन नहीं। अमृत की मर्यादा तब ही बचती है जब कोई जहर पीने वाला हो।

बहुत संभव है कि चलते-चलते हम इस दिशा से भटक जाएँ या गलत दिशा का चयन कर लें। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि थोड़े-थोड़े समय के बाद हम अपनी गति, दिशा और मंशा की जाँच करते रहें। जहाँ जरूरी हो बदलाव लाएँ। समय के अनुकूल कपड़े बदलना गलत बात नहीं है। कुल मिलाकर प्रश्न

केवल सैद्धान्तिक नहीं, केवल शिक्षात्मक 80/100 अंकों का नहीं, केवल पाठ्यक्रम की किताबों को बदलने से नहीं, बल्कि युवाओं को नवीन युग में लाकर अन्य प्रतियोगियों के मुकाबले खड़े करने का है। हर अभिभावक की इच्छा होती है कि उनका बच्चा अनुशासित होकर अच्छे अंक हासिल करे, लेकिन यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे बाजार से खरीदा जा सकता है। जरूरत है आपके सही प्रयास और बेहतर मार्गदर्शन की, जिसे यह पुस्तक काफी हद तक पूरा करेगी। यह पुस्तक आपको भीड़ से पहले कदम उठाने का रास्ता दिखलायेगी, अन्यथा आप भीड़ से घिर जायेंगे। आपको सिखायेगी कि भीड़ से बचने का एक ही उपाय है कि आप अपने कदम तेजी से कैसे बढ़ाएँ। खुशबूदार फूल धीरे–धीरे उगते हैं, घास जल्दी–जल्दी। ऊँचे और उत्तम अध्ययन से आत्मविश्वास बढ़ता है, जिसमें इच्छाशक्ति के बिना आपके हुनर की कोई अहमियत नहीं होती। अध्ययन से धन कमाया जा सकता है परन्तु धन से अध्ययन नहीं कमाया जा सकता। इसमें अच्छी पुस्तकें अस्त्र–शस्त्रों का काम क रती हैं। थोड़े शब्दों में कहें कि यह पोथी आपको अवसर हासिल करने की मंजिल दिखाएगी, जिससे आपको परखने, स्वयं आपको दूसरों के मुकाबले ज्यादा अच्छा करने की गुंजाइश का रास्ता ही नहीं, मंजिल भी पार करा देगी। अवसर और कुदरत बुद्धिमान के पक्ष में ही झुकते हैं।

'मौत' और 'जिन्दगी' : एक अनोखा खेल : शतरंज की बाजी कौन जीता ?

'LIFE' CHALLANGES TO 'DEATH' : WHO WINS–THE CHESS GAME?

इतनी रात को क्यों जोर–जोर से दरवाजा खटखटा रहे हो? कौन हो और तुम्हें क्या चाहिए?

मौत! और तुम्हारी जिन्दगी चाहिए—उसे लेने आया हूँ।' —'मौत' ने इनसान के भेष में जवाब दिया।

बहुत अच्छा—कृपया अन्दर पधारिए। आपका स्वागत है।

परन्तु तुम्हारी जिन्दगी (मौत) को ले जाने में थोड़ा समय बाकी है, अतः तुम चाहो तो तब तक अपने पूजा–पाठ तथा नित्यकर्म से निबट लो—'मौत' ने अन्दर कदम रख कर जवाब दिया।

नहीं, 'मौत' महोदय, नहीं। यह बाकी बचा थोड़ा समय ऐसे ही बर्बाद

करने या गुजारने का वक्त नहीं है। एक शतरंज की बाजी क्यों नहीं हम आपस में खेल लें। परन्तु शर्त एक ही है कि मुझे तब तक जीने का मौका दिया जाए, जब तक मैं बाजी हार नहीं जाऊँ और अगर मैं जीत गया तो मुझे जीवनदान (जिन्दगी) मिल जायेगा।

ठीक है—मंजूर है—'मौत' और 'जिन्दगी' ने हाथ मिला कर अपनी शर्तें स्वीकार की, एक–दूसरे ने शर्तों को निभाने का वादा किया। 'मौत' ने सोचा कि इनसान को तो आसानी से हराया जा सकता है क्यों नहीं बचे समय में इस इनसान की इच्छापूर्ति कर दी जाए।

'मौत' और 'जिन्दगी' मंजे हुए शतरंज के खिलाड़ी होने के कारण खेल चलता रहा—चलता रहा। 'मौत' का समय निकल गया। एक समय ऐसा आया कि जिन्दगी के दाँव मौत पर भारी पड़ने लगे। सुबह का उजाला हो चुका होता है। जिन्दगी चाल खेल कर 'मौत' के राजा को शह देता है और बचने के लिए 'मौत' को सोचने का समय देकर—वह मन्दिर में अन्तिम प्रार्थना के लिए जाता है। 'मौत' उसका पीछा करती है और मन्दिर में—पुजारी के भेष में प्रकट होकर—सारे भेद जानने की कोशिश करती है।

भगवान् की अन्तिम प्रार्थना में वह पुजारी को यह बतला देता है कि जीने के लिए इस समय मौत से शतरंज का खेल–खेल रहा है और 'मौत' के राजा को किस्त (Check) बचने के लिए कोई रास्ता नहीं मिलेगा, सिवाय एक चाल के।

पुजारी के भेष में मौका पाकर 'मौत' पूछती है कि आखिर किस तरह वह शतरंज की चालों में 'मौत' को हरा देगा? जिन्दगी अपनी सारी चालें उसे बतला देता है।

'मौत' का असली रूप अब 'जिन्दगी' के सामने था।

यह धोखा है.... धोखा है.... यह बड़ा धोखा है—जिन्दगी चिल्लाती है।

मगर मौत का काम करीब–करीब हो चुका है। उसको चालें चलनी बाकी हैं। परन्तु आखिरी चाल जिन्दगी की बाकी है—तब मौत का सवाल होता है, उसने मौत को इतने समय टाल कर क्या हासिल किया?

जिन्दगी का जवाब—बहुत-कुछ और बहुत-कुछ। अन्तिम चाल तो अभी भी बाकी ही है।

मैंने जीवन में संघर्ष करके जीना सीख लिया, मौत से लड़ना सीख लिया। क्या यह कम बहादुरी का काम नहीं सीखा? ***जब मैं पैदा हुआ था कहीं नहीं था और धोखे से मौत मुझे ले जायेगी तो मेरी हार भी कहीं जीत नहीं होगी?*** *इस नहीं और नहीं के बीच एक कॉमा (,) है जिसका नाम जीवन है, जिसको संघर्ष करके ही जीया जा सकता है, समर्पण करके नहीं। दरअसल जोखिम ही जीवन है। ब्रेक दी रूल (Break the rule) में विश्वास करो, हर चीज चलन के विरुद्ध करने की कोशिश करो।*

शायद जिस साम्राज्य के आप शहंशाह हैं उसका वारिस (मौत) अब तक कोई नहीं हुआ है। तमाम कोशिशों के तहत इस बीच मैंने जीने के लिए संघर्ष की कोशिश की। वह बहुत ज्यादा मायने रखती है। अभी भी मेरी कोशिश थमी नहीं है। अन्तिम चाल मेरी बाकी है। मुमकिन है कि कल कोई और इनसान (जिन्दगी) करिश्माई जादू से मुझसे बेहतर साबित करने में सक्षम हो जाए और मौत से संघर्ष जारी रखे। बहरहाल हारे हुए खिलाड़ी की आखिरी कोशिश की तरह—खेल में किसी को धोखा मत दो। खेल खेल की भावना से खेलो। बुराई और धोखे की नींव पर मिली सफलता (जीत) ताश के पत्तों की तरह ढह जाती है। विश्वास और भरोसे का सम्बन्ध रेशम की महीन डोरी की तरह होते हैं—डोर, जो दोनों तरफ से जुड़ी हो, जिसमें कोई धोखा नहीं हो, सिर्फ विश्वास ही हो। सभी इनसानों को एक दिन उसी रजिस्टर में हाजिरी लगानी पड़ेगी क्योंकि मौत वाले दफ्तर में छुट्टियाँ नहीं होतीं और एक इनसान को शतरंज खेलने का, मौत से बचने का मौका बार-बार नहीं मिलता। जिन्दगी की अन्तिम चाल ने शतरंज की बाजी को बराबर लाकर खड़ा कर दिया। 'मौत' जीत के लिए हाथ मलते ही रह गई।

दिमाग का सही इस्तेमाल न कर पाना इनसान की बहुत बड़ी खामी है। हम चाहे जैसे हों, बस एक दिमाग है। दिमाग अगर स्वस्थ, सक्रिय, रचनात्मक

है तो इनसान की खामियों को किसी-न-किसी खूबियों में बदला जा सकता है। याद रखें कि परफेक्सन (Perfection), खूबसूरती और सर्वोत्कृष्टता (Excellance) की राह में कोई पूर्णविराम (Full Stop) नहीं होता और शतरंज की बिसात पर केवल घोड़ा ही ढाई घर की चाल चल सकता है। परिवर्तन के इस दौर में घोड़े की चाल एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। वर्तमान भी इसमें कोई अपवाद नहीं है। आज बदलाव की हवाएँ पहले की तुलना में ज्यादा तेज बह रही हैं। समय ही इन प्रचलित पुरस्कारों से परे ऐसा न्यायाधीश होता है जो योग्यता का सही निर्णय करता है। रात की मौत से शतरंज की बाजी का नतीजा चीख-चीख कर बता रहा है कि मौत को गंभीरता से चुनौती देने वाला ही मौत को बराबर पर लाकर खड़ा कर सकता है। कोई भी परिणाम आखिरी परिणाम नहीं होता। बदलाव की उम्मीद हर कदम पर होती है। अंधेरे के ठीक पीछे उजाला ही होता है। बस, जरूरत होती है तो एक जज्बे की और एक साहस की। जीत उसकी होती है—जो जीत के लिए सोचता है—भले ही मौत ही सामने क्यों ना हो। खेल जानने वाला ही जिन्दगी का खेल खेलता है, बाकी यों ही हाथ मल कर रह जाते हैं।

शतरंज के खेल में आप ऐसी दुनिया के स्वामी होते हैं जहाँ आपकी पसन्द (सफेद या काले) के मोहरे आपकी मरजी के मुताबिक चलते हैं, न कि सामने वाले खिलाड़ी (मौत) के मुताबिक। जिन्दगी के इस खेल को खेलने वाले इनसान के लिए एक सुखद अनुभव होता है। शतरंज के खेल में भाग्य नाम की कोई चीज नहीं होती। इसमें आप अच्छा खेलते हैं तो ही जीतते हैं। इस खेल में मोहरों की मौत या जिन्दगी मोहरों के हाथ में नहीं, खेलने वाले खिलाड़ी (जिन्दगी) पर निर्भर करती है। जो जितनी प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल करेगा, वह उतना ही आगे बढ़ेगा और मात (किस्त) सामने वाले खिलाड़ी को ही देगा—भले ही सामने मौत ही क्यों ना हो?

शतरंज के इन 64 खानों में 16 मोहरों को अपनी शर्तों पर नचाने वाला (जिन्दगी) यह धुरंधर खिलाड़ी—जिन्दगी इतना पक्का खिलाड़ी होगा—शायद ही मौत ने ऐसा सोचा होगा। शतरंज की बाजी हार-जीत के बिना बराबरी पर आकर रुक गई और मौत को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। बड़ा आश्चर्यजनक परिणाम!

जिन्दगी की सीढ़ियों में कदम-दर-कदम बढ़ते हुए उसके पास एक ऐसा वक्त भी आता है, जब इच्छाशक्ति का धनी आदमी अपने-आपको हर काम में

सक्षम पाता है। इसके लिए सतत अभ्यास और अध्ययन की आवश्यकता होती है। जरूरी नहीं है कि उद्देश्य हमेशा बड़ा ही हो। बड़े उद्देश्यों को भी छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटा जा सकता है। केवल इनसान में ही यह अद्‌भुत शक्ति है कि वह अपनी कमजोरी मौत की ताकत को जिन्दगी में बदलने की गणित का सूत्र इजहार कर सकता है। आने वाले समय में डी. एन. ए. सूत्र का इजहार करना—इनसान के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। ईश्वर ने जब मस्तिष्क और हाथ बनाए तभी हमें सोचने, सपने संजोने और काम करने की योग्यता भी दी है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इनसान को ही परिवर्तन करना है—किसी दूसरे जीव को नहीं। आने वाला कल हमारा होगा—मौत को बार-बार वापस खाली हाथ जाना होगा। एक अमरीकी वैज्ञानिक ने दावा किया है कि वह दुनिया का पहला कृत्रिम जीवन तैयार करने के बहुत करीब है। इनसान के आनुवंशिक कोड को पढ़ने की दौड़ में शामिल विवादित डी. एन. ए. अनुसंधानकर्ता, केंग वेंटर का दावा है कि वह जल्द ही संश्लेषित गुणसूत्र, जीन की श्रेणी बना लेंगे और इसे कोशिका में स्थापित भी कर देंगे। अगर वेंटर और उसके सहयोगियों को सफलता मिलती है तो उन्हें इस नई खोज का पूरा श्रेय दिया जायेगा। परन्तु इन सबके लिए हमें नियमों के बंधन में बंधे रहना होगा—अन्यथा अगर जिन्दगी की पूरी चाबी—इनसान के हाथ लग जाए तो कहीं अर्थ का अनर्थ नहीं कर दे! इसलिए डी. एन. ए. सूत्र की कामयाबी की गणित में एक-एक सवाल बड़ी सूझ-बूझ से हल करने पड़ेंगे—कब कहाँ चूक हो जाए—इसकी सावधानी इनसान को ही रखनी पड़ेगी। दिशाहीन लक्ष्य और परिवर्तन कभी भी भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। इनसान को अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार करना होगा। उसे भगवान् (God) बनने की सीधी (Direct) रेस में शामिल होने की बजाय थोड़ा दूर ही रहना होगा क्योंकि बात उन मूल्यों की है जहाँ हम अपने भगवान् को पाने से पहले ही सर्वनाश करके खो देते हैं। अकसर इनसान सोचता है कि जो-कुछ वह कर रहा है, उससे समाज, देश या दुनिया को कोई फर्क नहीं पड़ता। दरअसल हम गलत दिशा से सचाई को नापने की कोशिश कर रहे हैं। बुराई की नींव पर मिली सफलता, ताश के पत्तों की तरह ढह सकती है—दुनिया समाप्त भी हो सकती है।

—डा. राम बजाज